श्री राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री, भारत सरकार

श्रवणबेल गोला तीर्थ पर समारोह पर बोलते हुए कहा – भारतीय संस्कृति का कोई अनमोल रत्न है तो वह है जैन धर्म है यह धर्म एक वैज्ञानिक है, वह हिंसा को मूल रूप से नकारता है जैन धर्म यह स्पष्ट किया है कि ब्रह्माण्ड बना है वह कण का समूह है जिसको पुद्गल कहा जाता है पूर्व में यह कहा जाता रहा है कि पुद्गलकहा गया है को नहीं स्वीकारा लेकिन कुछ वर्ष पूर्व रूस की सर्व प्रयोगशाला ने यह सिद्ध किया कि ब्रह्माण्ड कार्ल पर्टिकल कहा गया। अब कोई इसको गलत सिद्ध नहीं कर सकता जिसको जैन धर्म ने प्राचीनकाल में ही सिद्ध कर दिया।

श्री ब्रह्मानन्द जी महाराज
वेलूर मठ, कर्नाटक

एक समारोह में अपने प्रवचन नवकार मंत्र से प्रारंभ किया, फिर उन्होंने सन्यासियों, ब्रह्मचारियां व माताएं व सज्जनों को बोलते हुए कह ाकि जो अभी मंत्र बोला वह नवकार मंत्र है जो जैन धर्म का विख्यात मंत्र है तथा जैन अनुयायी प्रायः सभी उसको मानते है, भजते है उन्होंने कहा कि जैन धर्म कर्मवाद को मानता है, उसका मान्ना है कि जैसा बीज बोएगे, वैसा ही फल प्राप्त होगा यदि एक व्यक्ति किसी को बुरा बोलता है या अपमान करता है तो वह आगामी भव में कभी भी उसका भी अपमान करेगा वह प्रतिशोध अवश्य लेता है। इसलिए मनुष्य को सद्व्यवहारी, संयमी, सदाचारी होना चाहिए, यदि त्रुटि होती है उसको शुद्ध करने के लिए सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक् चरित्र व तप के सहारे नष्ट करने का उपाय भी बतलाया है।

आपने महावीर के सिद्धान्तों का भी वर्णन करते हुए कहा मुनिगण पांच महाव्रतधारी होते है लेकिन हर व्यक्ति पांच महाव्रत का पालन नहीं कर सकता, उसका परिवार है, समाज है उसके लिए अणुव्रत बतलाए है जिनका पालन करते हुए भी मोक्ष प्राप्त कर सकता है। उन्होंने सर्वप्रथम यह भी उल्लेख किया कि उन्होंने कई विद्वानों के प्रवचन सुन रखे है उन सभी का सार सार्वभौम पर चल रहे थे लेकिन जैन धर्म में इसके इससे भी अधिक जैन धर्म में उल्लेखित है।

उन्होंने जैन धर्म के क्षमा याचना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन अनुयायी प्रतिदिन "सामयिक" करते हुए सभी प्राणियों से मन वचन काया से क्षमा मांगता है इसके अतिरिक्त उनका पर्व एक वर्ष में ऐसा आता है जिसको संवत्सरी कहते है उस दिन मनुष्य एक दूसरे से व्यक्तिगत रूप से व उपाश्रय मे जाकर सभी से क्षमा मांगते है और उन्होने अनेकान्तवाद का विवरण दिया कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी दृष्टि से देखता है। एक व्यक्ति सत्ता को अपनी दृष्टि से देखता है, यह सही है और दूसरा व्यक्ति अपनी दृष्टि से देखता है, वह भी सही है, यही अनेकान्तवाद है और सार्वभौम सत्य है।

डॉ. कल्याणक गंगवाल

फिजिशियन एवं हृदय रोग विशेषज्ञ, हॉस्पीटल, पूना

डॉ. श्री गंगवाल पेशा से डॉक्टर है तथा HD कक्षाओं को अध्यापन करने का कार्य कर रहे है, इनमें गत 50 वर्षों से कार्यरत् है इनका कहना है कि जैन धर्म पूर्णरूप से वैज्ञानिक है, उनका भी कहना है कि सभी लोग जैनिजम को सपोर्ट करते है लेकिन प्रेक्टिस नहीं करते हैं, वे प्रेक्टिस करते है और सभी को प्रेक्टिस करने का सलाह देते हैं।

जैन धर्म :

जैन धर्म एक जीवन शैली है। यह जैन धर्म सर्व पृथ्वी पर सबसे प्राचीन जैन धर्म है। इस तथ्य को बाल गंगाधर तिलक ने स्वीकार किया है और कहा कि वैदिक धर्म से भी पहले यह जैन धर्म विद्यमान था इसके कई उदाहरण मिलते है कि सिन्धु घाटी व इथोदिया के उत्खनन के समय जैन मूर्तिया प्राप्त हुई है वे जीव दया के कार्य व अन्य कार्य के लिए कई बार विदेशों में जाते रहे है, वहां पर वहां के मनुष्य पूछते है कि मैं जैव हूँ, मैं शकाहारी हूँ, तथा रात्रि में भोजन नहीं करते है।

यह जैन होने की पहचान है। हमारे गुरूओं ने कई साहित्य की रचना की जिसमें जैन धर्म को पानी बनकर पीते है। ये जैन की पहचान है। वे जीवदया का कार्य करते हुए इन्होंने विश्व में 40 लाख मनुष्यों को मांसाहार से शाकाहार बनाया है, यह कार्य ग्रिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड बुक में अंकित है। जो बात नहीं है उसको जैन पालन कर ले तो संसार से सभी प्रकार की बुराई समाप्त हो जाएगी। वे महावीर भगवान के सिद्धान्त, अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अनेकान्तवाद आज कोई भी सिद्धान्त बनता है वह सब का उल्लेख जैन धर्म के साहित्य में अंकित है–पृथ्वीकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय अग्निकाय, जलकाल जीवन की होते हैं।

कोई 100 वर्ष पूर्व जगदीशचन्द्र बसु ने सिद्ध किया कि वनस्पति, में लेकिन जैन धर्म में पूर्व से ही उल्लेख है। आज जितनी भी महामारिया आई है वे जीवों के माध्यम से ही है, उसकी समानकता भी देखी है उस व्यक्ति पर इसका प्रभाव नहीं पड़ा ओर पड़ा भी है तो अन्य बिमारियों के कारण। अगर वैक्सीन भी बनी है तो शाकाहारी वस्तु से बनेगी तो उसका प्रभाव प्रभावी होगा। महामहारिया पूर्व काल में भी आई है। उसका क्या व कैसे सावधानियां रखी जावे, उसका उल्लेख भी लगभग 2300 वर्ष पूर्व इसका वर्णन आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी अपने शोध रचना में किया कि उसको कैसे रखना चाहिए, कैसे खाना देना चाहिए, छूना नहीं चाहिए। वर्तमान में WHO ने जो दिशा–निर्देश दिये वे सभी का विस्तार से उल्लेख है। यहां तक शमशान तक कैसे सावधान रहना चाहिए।

अतः माँसाहार को त्याग कर शाकाहार बने जिससे हर प्रकार की बिमारी से बचा जा सके।

श्री पार्श्वनाथ भगवान (दादा पार्श्वनाथ) मंदिर, जूना बेड़ा

यह मंदिर (तीर्थ) राजस्थान के बाली तहसील मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर ग्राम के बाहर पहाडियों की तलहटी पर स्थित है। यह तीर्थ 108 पार्श्वनाथ की सूची में सम्मिलित है तथा 11वीं शताब्दी का है। यह तीर्थ पहाड़ियों से ढका होने के साथ साथ प्रकृति की गोद में बसा हुआ है।

यह तीर्थ किसी भी आक्रमणकारी के ध्यान में न आने के कारण सुरक्षित रहा। यह मंदिर ऐतिहासिकता, प्राकृतिक कलाकृति, सौन्दर्यता के लिए अद्‌भुत है। पहले यहां का मार्ग पगडंडी का था व कीचड़ से सना हुआ होने से यात्रियों को यहाँ पहुँचने में बहुत कष्ट उठाना पड़ता था। प्राचीनकाल में तीर्थ तक जाने का मार्ग केवल एक पगडंडीनुमा था । इस मंदिर में श्याम पाषाण की प्रतिमा विराजित है।

यह मंदिर बावन जिनालय का बना हुआ है। मंदिर के चारो ओर तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा के साथ–साथ पार्श्वनाथ भगवान के भव विशाल एवं सुन्दर चित्रपट्ट में दर्शाया गया है। प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों के चित्रपट्ट भी बने हुए है। इसके अतिरिक्त आचार्य श्री हीरसूरि जी महाराज के जीवन से सम्बन्धित भी चित्रपट बने हुए है।

इस मंदिर की सुन्दरता, स्थापत्य कला, मूर्तिकला, कोरनी कार्य व नक्काशी देखने योग्य है।

मंदिर में चढ़ते हुए स्थान से बाई ओर विशाल स्तम्भ बना हुआ है। इसे कबूतर खाना कहते हैं। यहां पर 500 कबुतरों के ठहरने का स्थान, पीने का पानी एवं दाना चुगने का स्थान बना हुआ है। जहां पर नियमित रूप से दाना डाला जाता है एवं लगभग 500 कबुतर रहते है। यहां पर विशाल धर्मशाला, भोजनशाला बनी हुई है। जो व्यवस्थित एवं सुसज्जित है। इस तीर्थ को देखने के लिए बाहर से कई पर्यटक आते है। इस तीर्थ की व्यवस्था दादा पार्श्वनाथ जैन पेड़ी जूनाबेड़ा द्वारा की जाती है।

मंदिर के उपर श्री आदिनाथ भगवान की सुन्दर प्रतिमा

विराजित है जो 11वीं शताब्दी की बनी है।

समय के अनुसार विकास होता रहा ओर जाने का मार्ग भी अच्छा बन गया। इस तीर्थ के पास एक ग्राम विकसित हुआ वह नया बेड़ा कहलाने लगा ओर यह मंदिर जूना बेड़ा के नाम से जाना जाता है। मंदिर का परिसर बहुत विस्तृत है। आने वाला वापस जाने का नाम नहीं लेता है। असिम शांति का अनुभव होता है।

प्रवेश द्वार आपका स्वागत करने को लालायित रहता है। जीर्णोद्धार कार्य से मंदिर परिसर को सुलभ बनाने के लिए नूतन मंदिर बनाया गया और प्राचीन प्रतिमा को उत्थापित कर प्रतिष्ठित की गई। यह जीर्णाद्धार सन् 2005 में कराया गया है जो वर्तमान में भी चल रहा है।

नूतन मंदिर व प्राचीनता का विवरण निम्न प्रकार है।

यह तीर्थ प्राचीनता, आलौकिक सौन्दर्य से भरपूर है। यह सुन्दर वातावरण में हुआ है चमत्कारी तीर्थ है। इस मंदिर में श्वेत पाषाण की प्रतिमा विराजित है। यह वही प्राचीन प्रतिमा है। मंदिर के बाहर दोनों ओर खड़ी प्रतिमा गब्बारे के बाहर विराजित है। यह तीर्थ हीरसूरि की म.सा. द्वारा (अकबर बोधक) प्रतिष्ठित है।

यह रजवाड़ा जैसा विशाल परिसर में बना हुआ है। रंग मंडप में चतुर्मुखी आदिनाथ भ्रवान की प्रतिमा कसौटी पत्थर से बनी है। पीछे की ओर पार्श्वनाथ भगवान का समोसरण बना हुआ है जो अति सुन्दर, आकर्षक व दर्शनीय है, एक बार अवश्य दर्शन करें।

श्री सम्भवनाथ भगवान मंदिर, नया बेड़ा

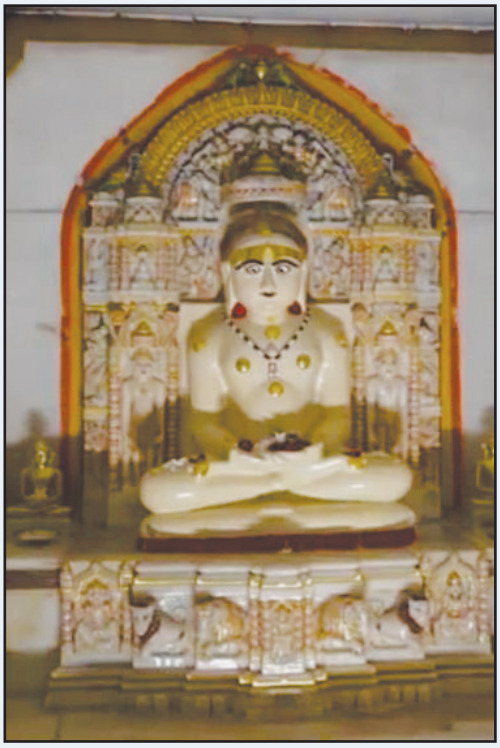

यह तीर्थ शिखरबन्द एवं बावन जिनालय का बना है। संभवनाथ भगवान की प्रतिमा आकर्षक है। इसको देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि हर असंभव कार्य को संभव कर देते है।

संभवनाथ भगवान के जीवनकाल में वे भी भगवान की भक्ति में मग्न रहते थे। इसी कारण तीर्थकर गोत्रबन्धन हुआ । इसलिये यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति को संभवनाथ की भक्ति से लीन रहना चाहिए जिससे उनका भी कल्याण हो।

इस मंदिर व प्रतिमा की प्रतिष्ठा आचार्य श्री हीरसूरीजी द्वारा 16 वीं शताब्दी में कराई गई। यहां पर भोजनशाला व धर्मशाला की व्यवस्था है। जिसकी व्यवस्था संभवनाथ भगवान देरासर पेढी द्वारा की जाती है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, नाणा

नाणा तीर्थ–सिरोही जिले के सिरोही–रोड़ रेल्वे स्टेशन से लगभग 10 कि.मी. दूर नगर के मध्य में स्थित है। यह तीर्थ शिखरबंद व बावन जिनालय का है। ऐसा कहा जाता है कि यह मंदिर श्री महावीर भगवान के जीवन काल में ही बनाया है। इसलिए इसके लिए यह कहावत है :

नाणा, दियाणा, नादिया

जीवित स्वामी वान्दिया

मन्दिर में स्थापित प्रतिमा श्वेत पाषाण की लगभग 1.22 मीटर ऊँची तथा परिकर सहित 1.98 मीटर ऊँची है।

मंदिर में प्राप्त शिलालेख से यह प्रमाणित है कि वि.सं. 1059, 1017, 1659 से यह ज्ञात होता है कि यह काफी विकसित था और समृद्धि से भरपूर था। ऐतिहासिक दृष्टि से यह नहीं कहा जा सकता है कि वास्तविकता ज्ञात नहीं होती लेकिन उक्त लेखों से यह स्पष्ट है कि श्री महावीर भगवान के जीवनकाल के समय की है। यह भी सत्य हो सकता है कि प्राचीनकाल से ही अब तक कई बार इस मंदिर का जिर्णोद्धार हुआ है।

वर्तमान में स्थापित प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख वि.सं. 1505 माह कृष्णा 9 शनिवार को श्री शांतिसूरीश्वर जी द्वारा प्रतिष्ठत की गई है लेकिन यह प्रतिमा भी बहुत प्रभावशाली है और प्रभु के जीवनकाल की होने से इसको विशिष्ठता की दृष्टि से देखा जाता है। नाणक्यगच्छ की उत्पत्ति यही होना बताया जाता है।

12वीं शताब्दी के पूर्व होने का उल्लेख है। बामणवाड़ जी पंचतीर्थी का एक तीर्थ स्थान है। त्रिभुवन मंत्री के वशंज नारायण भूता ने साहराव नाम का अरठ भगवान की पूजा सेवा के लिए भेंट दिया था, उस समय उपकेश गच्छ के आचार्य श्री सिंहसूरीजी विद्यमान थे। शिलालेख पर वि.सं. 659 भादवा शुक्ला 7 का लेख

उत्कीर्ण होना बताया गया है। तीर्थ पर ज्येष्ठ वदि 6 को ध्वजा चढ़ाई जाती है।

इसके अतिरिक्त एक अन्य मंदिर भी है। प्रभु की व मंदिर की कला अद्‌भूत है व हँसमुख है औरमन मोहक भी है। प्रतिमा के आस पास व मंदिर के कलात्मक तोरण देखने योग्य है। यहां पर प्राचीन काल का पाषाण का नन्दीश्वर द्वीप बना हुआ है जो बहुत आकर्षक है। पट्ट पर वि.सं. 1274 का लेख उत्कीर्ण है।

यहां से नाणा रेल्वे स्टेशन 2 किलोमीटर दूर है। यहां पर धर्मशाला भोजनशाला की समुचित व्यवस्था है। नक्काशी व कला देखने योग्य है। परिक्रमा क्षेत्र में चित्र पट्ट आकर्षक रूप से बने हुए हैं।

नाणाग्राम से ही छः पीढ़ी के सदस्य देलवाड़ा गांव में आकर बसे थे उनमें से तीन परिवार आज भी विद्यमान है। ये नेणा महात्मा ब्राह्मण कहलाते हैं।

उनसे सम्पर्क करने पर उन्होंने बताया कि नाणा नगर पहले बहुत विकसित था, बाद में वहां पर धीरे धीरे विकास कम होता गया जिससे उनके पूर्वज रोटी रोजी कमाने के लिये देलवाड़ा आकर बसे उनका यह कहना है कि उनके पूर्वज 500 वर्ष पहले यहां आये । उनका भी यह कहना है कि नाणा ग्राम हजारो साल पुराना है।

श्री नवलखा पार्श्वनाथ भगवान मंदिर, पाली

साण्डेराव नगर के इतिहास से ज्ञात होता है कि नगर के मंदिर निर्माण के लिए आचर्य श्री यशोभद्रसूरि जी के उपदेश से पाली नगर से पाली के जैन समाज ने घी भेजा, तब साण्डेराव नगर के समाज के सदस्य ने पाली जाकर भुगतान करना चाहा तो पाली के सदस्यों ने लेने से इन्कार कर दिया तब साण्डेराव के सदस्यों ने यहां तक विशाल मंदिर का निर्माण कराया, इस निर्माण में लगभग 9 लाख राशि व्यय हुई। इसलिए इसका नाम नवलखा मंदिर पड़ा।

सर्वप्रथम मंदिर में श्री महावीर भगवान की प्रतिमा विराजित हुई और वि.सं. 1686 में जीर्णोद्धार के समय यहां श्री पार्श्वनाथम भगवान की प्रतिमा विराजित कराई तब से ही श्री नवलखा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर कहलाने लगा।

राजस्थान राज्य के प्राचीन शहरों में पाली भी एक प्राचीन शहर है। जो उदयपुर से लगभग 180 कि.मी. व जोधपुर से 80 किमी दूर है। इसका प्राचीन नाम पल्ली, पल्लीका का उल्लेख मंदिर में दीवार में लगा एक शिलालेख वि.सं. 1178 का है।

इसी शिलालेख में यह भी उल्लेख है कि इस नगरी में ही वि.सं. 969 में सण्डेरगच्छ के आचार्य श्री यशोभद्रसूरि जी को आचार्य पदवी प्रदान की गई थी। पालीवाल गच्छ की उत्पत्ति इसी नगरी से होना बताया है ऐसा भी कहा जाता है कि इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा श्री यशोभद्रसूरि जी द्वारा सम्पन्न हुई। प्रतिमा इससे भी

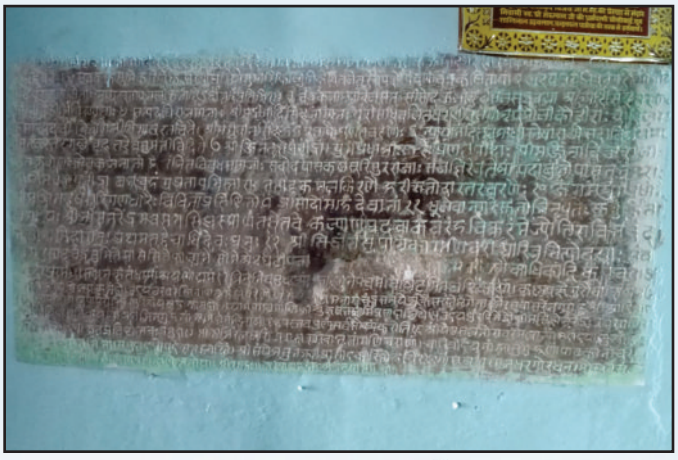

प्राचीन है, सम्प्रतिकालीन होकर श्वेत पाषाण की विराजित हें यह 52 जिनालय का मंदिर है।

परिक्रमा क्षेत्र में बीस विहरमान में से एक श्री ऋषमानन स्वामी (मूलनायक देवरी में) पर वि.सं. 1186 का लेख है।

मूलनायक पर सं. 1929 का लेख है सभामण्डप के स्तम्भ पर विभिन्न रंगों के कांच से नक्काशी की हुई है जो सुंदरता को बढ़ाती है। समय के अभाव व मंदिर मंगल हो जाने के कारण दर्शन नहीं हो सके। अन्य मंदिर (1) श्री आदिनाथ भगवान (2) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान (3) श्री गौड़ी पार्श्वनाथ का मंदिर वि.सं. 1102 का है। वि.सं. 1702 का लेख है।

यह मंदिर विशाल था। इस पर 1686 का लेख है। रंग मण्डप में सुंदर रचना है सं. 1144, 1178 (1201) के शिलालेख है।

गांव के बाहर एक छोटी मगरी (पहाड़ी) पर श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर है जिस पर जाने के लिए 108 सीढ़ीयां बनी हुई है। इसको डाबारी का मन्दिर भी कहते हैं।

श्री सुमतिनाथ भगवान मंदिर, बीकानेर

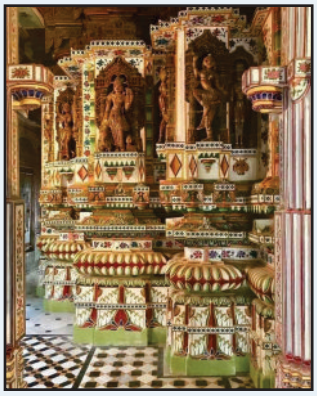

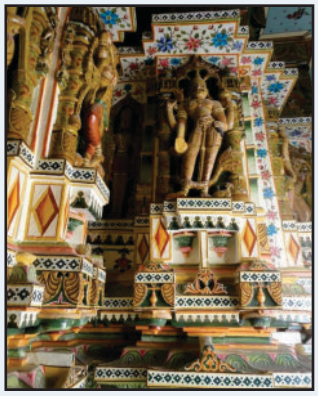

यह विशाल मंदिर तीर्थंकर के नाम से नहीं जानकर मंदिर के निर्माता के नाम से जाना जाता है, यह मंदिर भांडशाह के नाम से जाना जाता है, यह मंदिर तीन मंजिला बना हुआ है जिसकी ऊँचाई शिखर तक 108 फीट है।

यह नगर का सबसे ऊँचा मंदिर है जिसको बीकानेर नगर क्षेत्र से 20 किलोमटर दूर से देखा जा सकता है, इसकी विशेषता यह है कि इसकी नींव में पानी के बजाय घी डाला गया। नींव की गहराई चार हाथी की ऊँचाई जितनी है।

जब नींव खुदाई कार्य होने के बाद वहां पूजन में एक बूंद घी जमीन पर गिर गया तब सेठजी (भांड शाह) ने उस घी को लेकर अपनी जुती पर लगा दिया। तब कारीगरों ने सोचा कि जमीन पर पड़े घी को भी जूते पर लगा दिया, तो लाखों रूपये से बनने वाला मंदिर कैसे बनायेग ? ये बहुत कंजूस है तब कारीगरों ने दूसरे दिन कहा कि ''इसकी नींव घी से भरी जाए तो मंदिर काफी मजबुत रहेगा क्योंकि सेठ घी का व्यापारी था'' जिससे कहलाया कि सभी घी को उनके पास भेज दे।

सूचना प्राप्त होते ही गाड़ियां भरकर घी पहुंचने लगा ओर सेठ ने घी को नींव में डालना चालू कर दिया, जिसको कारीगरों ने देखा, और कहा घी डालना बन्द कर देवें और सेठ से क्षमा मांगते हुए कहा कि आपको जमीन पर पड़े हुए घी को उठाते हुए जूते पर लगाते हुए देखा तो हमने सोचा कि आप इतना विशाल मंदिर कैसे बना पायेंगे ? इसलिए हमने घी डालने के लिए कहा एवं पुनः क्षमा मांगी। तब सेठ ने कहा कि हम जैन लोग अनावश्यक वस्तु समझकर नष्ट नहीं करते एवं उसका उपयोग करते हैं।

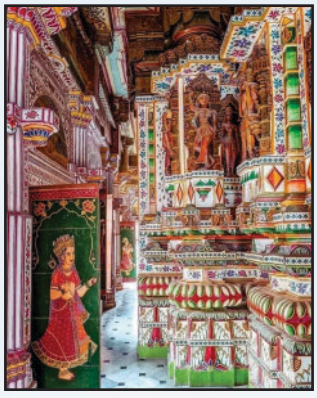

दूसरा मुख्य कारण यह भी बताया कि हम जैन लोग अहिंसा में विश्वास करते हैं। यदि घी की एक बूंद भी पड़ी रहती तो अनन्त चींटियां आ जाती और उनकी हिंसा हो जाती और मुझे जीव विरादना का पाप लगता अतः मैं कर्मबन्धन से बचा।

इसकी नींव में चालीस हजार मन घी का उपयोग हुआ है।

सेठ की इच्छा थी कि मंदिर सात मंजिला बने। उससे पूर्व सेठजी का निधन हो गया। शेष कार्य को उनके छोटे भाई सांडा शाह एवं सेठजी की सन्तानों ने मिलकर पूर्ण कराया। इस मंदिर की विशेषता यह है कि मंदिर के सभा मंडप में कई तीर्थंकर एवं महापुरूषों के चित्रों द्वारा कथा करने में वर्णित किया। इन सभी चित्रों का निर्माण करने में सोने का उपयोग किया गया जो वर्तमान में इसी हालत में है।

इस मंदिर को राष्ट्रीय ट्रेवलिंग एजेन्सी के प्रमुख ने अपनी सूची में सम्मिलित किया है। इसको देखने के लिए कई पर्यटक आते है। इस मंदिर की व्यवस्था चिन्तामणि पार्श्वनाथ प्रन्यास द्वारा की जाती है। यह मंदिर लगभग 500 वर्ष प्राचीन है।

श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर

यह मंदिर भांडाशाह के छोटे भाई सांडर शाह ने मंदिर से कूछ दुरी पर एक पार्क में बनाया जिसकी कला भी आकर्षक है।

इस मंदिर की विशेषता यह है कि मंदिर परिसर में भोमिया जी की प्रतिमा स्थापित है जिसकी परिक्रमा लगाने पर मनुष्य की सभी पीड़ाए दूर होती है। यह मंदिर भी लगभग 490 वर्ष प्राचीन है।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, बीकानेर

यह प्राचीन मंदिर है। इसके लिए पुस्तक "दीवान करमचंद बच्छावत में उल्लेख है कि इस मंदिर के तहखाना में स्थापित प्रतिमा को 16वीं शताब्दी में 1576 ई. लाहौर के नवाब श्री तुसरमखान ने मारवाड़ पर आक्रमण करते हुए सिरोही नगर के मंदिर में से यह 1050 प्रतिमाओं को लूटकर ले गए। चूँकि श्री बच्छावत जैन धर्म के अनुयायी थे, उसके फलस्वरूप अपने प्रयास से ये प्रतिमाएं पुनः लाए और बीकानेर में सुरक्षित की जो मंदिर के तहखाना में स्थापित है।

इस प्रतिमा की विशेषता है कि प्रतिमा में हीरा, पन्ना, मूंगा आदि महत्वपूर्ण जवाहरात लगे हुए है। कहते है कि इसमें लगे हुए हीरे कोहिनूर हीरे के समान है।

इसके अतिरिक्त बीकानेर नगर में निम्न मंदिर भी स्थापित है, दर्शन, पूजन का लाभ लेने का अनुरोध है।

1) कुन्थुनाथ
2) आदिनाथ – 1992
3) पार्श्वनाथ
4) शान्तिनाथ – 1890
5) सुपार्श्वनाथ
6) वासुपुज्य
7) महावीर स्वामी
8) अजीतनाथ
9) विमलनाथ – 1894
10) पार्श्वनाथ
11) आदिनाथ
12) शान्तिनाथ
13) वासुपुज्य
14) महावीर स्वामी
15) आदिनाथ, 1592
16) शान्तिनाथ
17) पद्मप्रभु
18) शंखेश्वर पार्श्वनाथ
19) महावीर स्वामी
20) पार्श्वनाथ – 1927
21) गौड़ी पार्श्वनाथ – 1889
22) आदिनाथ
23) शांतिनाथ I
24) शांतिनाथ – 1521
25) नेमीनाथ
26) अभिनन्दन
27) सिमन्धर स्वामी 1887
28) पार्श्वनाथ
29) चन्द्रप्रभु
30) अजितनाथ

ओसवाल जाति की उत्पति स्थल : ओसियां नगरी

नगर का इतिहास : यह नगर जोधपुर से 65 कि.मी. व ओसिया रेल्वे स्टेशन से 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। संसार में दो ही प्रमुख रेगिस्तान है, पहला अफ्रीका का सहारा एवं दूसरा भारत के राजस्थान का थार। ओसियां एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगरी रही है। यह रेगिस्तान का प्रवेश द्वार है। यह जैसलमेर एवं पाकिस्तान तक फैला हुआ है। यह मारवाड़ की राजधानी भी रही है, जहां पर प्रतिहारवंशी राजा उत्पल था और उनका मंत्री बिहड़देव था। ऐसा बताया जाता है कि यह दसवीं (वि.सं. 1011) शताब्दी का बसा हुआ है। पूर्व में इसका क्षेत्र बहुत बड़ा था जो आज सिकुड़ कर छोटा हो गया है।

इस नगर में 16 महत्वपूर्ण प्राचीन मंदिर है। आज का लोहावट (35 कि.मी.) तिवरी (8 कि.मी.), खतरियावास (6 कि.मी.) जो पहले क्रमशः लौहारवास, तेलीवाड़ा, खचीवास आदि मोहल्ले थे। यहां के प्रमुख मन्दिरों में शिव मन्दिर, हरिहर मन्दिर, विष्णु मन्दिर, प्राचीन सूर्य मन्दिर, पीपलाज मन्दिर आदि के साथ जैन मन्दिर–नवग्रह मन्दिर, नवलखा बावड़ी मन्दिर व चामुण्डा (सच्चियामाता) का मन्दिर आदि प्रसिद्ध है। सच्चियामाता के मन्दिर को ओसियां माता का मन्दिर भी कहा जाता है।

प्राचीनकाल में यह एक प्रसिद्ध एवं बड़ी मण्डी थी, जहां पर देश–विदेश के व्यापारी आकर अपना व्यवसाय करते थे। यहां से 6 कि.मी. की दूरी पर सिरमण्डी नामक स्थान है, जहां पर मण्डी (बाजार) का काम होता था। बैठवासिया ग्राम में गन्ने की खेती होती थी तथा घण्टाघाटी इस नगर का प्रवेश द्वार है। प्रमुख मन्दिरों का वर्णन निम्नानुसार है :

नवग्रह मन्दिर

यह मन्दिर ओसियां नगर से लगभग 35 कि.मी. दूर जोधपुर–फालौदी मार्ग पर सड़क से करीब 4 कि.मी. की दूरी पर कुबेर मन्दिर के नाम से जाना जाता है। कुबेर की मूर्ति जो मूलनायक है और मन्दिर की परिधि में नवग्रह के चित्र बने हुए है। जो मन्दिर की सुन्दरता में चार चाँद लगाते है। यह मन्दिर छोटी पहाड़ी पर स्थित है, जिस पर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई है और नव दरवाजे है जो

कि स्वच्छ व सुन्दर है। यहां पर नवग्रह की अंगूठी भी सशुल्क प्राप्त की जा सकती है। पुरा मन्दिर परिसर देव–देवियों की सुन्दर कलात्मक प्रतिमाओं से शोभायमान है। मन्दिर परिसर में एक पीपल का पेड़ है। इस पेड़ के पास की मिट्टी के लिए कहा जाता है कि कोई व्यक्ति रोग ग्रसित है तो निम्नानुसार उसका प्रयोग करने पर रोग मुक्त हो जाता है ऐसी यहां की मान्यता है। यह इस स्थल के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति का प्रतीक है ।ऐतिहासिकता की प्रमाणिकता नहीं है।

1) पानी मिट्टी में डालकर छानकर पीना 2) दर्द के स्थान पर लेप करना

3) थोड़ी सी मिट्टी पानी में डालकर स्नान करना 4) यह क्रम केवल नव दिन तक प्रातःकाल करना होता है।

कहा जाता है कि यह देश का पहले कुबेर मन्दिर है। मंदिर स्थल से दूर–दूर तक का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है।

श्री पीपलाज माता जी मन्दिर

यह जैन मन्दिर से 100 मीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक कलात्मक मन्दिर है। पूर्व में यहां पर एक पीपल का वृक्ष था। मन्दिर में कोई मूर्ति नहीं है, क्योंकि वह पूर्व में चोरी हो गई थी, बाद में प्राप्त भी हो गई, लेकिन पुलिस प्रशासन ने समाज को सुपुर्द नहीं की, क्योंकि उनका आदेश है कि चार दीवारी थोड़ी ऊँची बनावे, तब दी जावेगी जिससे पुनः चोरी न हो। यह प्रतिमा पुलिस स्टेशन पर रखी हुई है। मन्दिर की फेरी में एक माता की मूर्ति आलिए में है जो प्राचीन बतलाई जाती है। इसे भी चोरों ने निकालने के लिए प्रयास किया लेकिन निकाल नहीं सके। अतः सुरक्षित रही। यह भी एक प्राचीन मूर्ति है।

श्री सच्चियाय माता जी (ओसियां माता जी) मंदिर

यह मन्दिर अति प्राचीन है। इसके लिए एक दन्तकथा प्रचलित है, जिसके अनुसार नगर के एक युवक की शादी जैसलमेर में हुई। विवाह के पश्चात् वह अपनी पत्नी को घर पर लेकर आया, तब की कहानी है, वह लड़की देवी भक्त थी।

वह साधना एवं पूजा–पाठ के पहले भोजन नहीं करती थी। यहां पर कोई देवी मन्दिर नहीं था। वह भोजन करना छोड़ कर देवी की आराधना करने लगी। कई दिन व्यतीत होने के बाद देवी ने स्वप्न में आकर कहा कि आज से 9वें दिन नगर के बाहर की पहाड़ी पर पहुँच जाना, दर्शन दूंगी। ठीक नवें दिन वह बहू यानि वह लड़की पहाड़ी पर पहुंच गई। थोड़ी देर बाद एक तेज गर्जना हुई और पहाड़ फटने लगा। फटने के स्थान से पृथ्वी में से धीरे–धीरे उपर आई तब बहु ने देवी के दर्शन किये।

देवी आधी ही उपर आई होगी कि एक चरवाहा जो पहाड़ के गर्जन से भयभीत होकर उधर आ पहुँचा, उसको देखकर मूर्ति वहीं पर स्थित हो गई और जिस स्थिति में थी उसी में स्थिर हो गई। यह समाचार सुनकर नगर के सभी लोग देवी के दर्शन करने लगे। सभी ने विचार किया कि वहां पर देवी मन्दिर बनाया जावे लेकिन धन के अभाव में यह संभव नहीं हो सका। उसी दिन राजा उत्पल को स्वप्न आया कि नोलखा बावड़ी पर एक खजाना है जिसे निकालकर मन्दिर निर्माण करें। बताए अनुसार खनन करने पर खजाना प्राप्त हुआ ओर विशाल मन्दिर का निर्माण कराया गया जिस स्थिति में देवी विराजमान थी आज भी उसी स्थिति में विराजमान है। इस मन्दिर तक पहुंचने के लिए 108 सीढ़ियाँ बनी हुई है। इसमें पूर्व में 8 तोरण द्वार थे जो अब 15 हो गये है तथा ये काफी कलात्मक है। इस देवी के सम्मुख पशु बलि भी होती थी परन्तु वर्तमान में नहीं होती है।

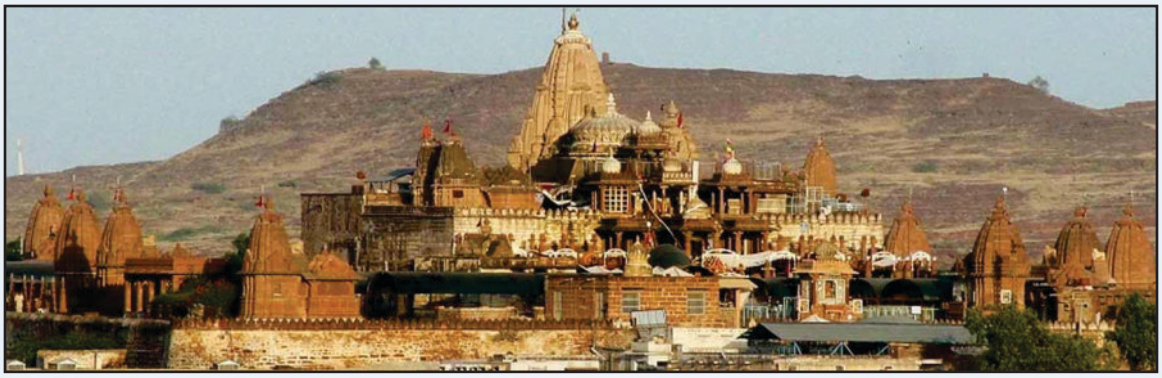

श्री महावीर भगवान का मन्दिर

विन्ध्याचल की पहाड़ी पर साधना करते हुए जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर के छठे गणधर रत्नप्रभूसूरीजी ने विचार किया कि रेगिस्तान में भी लोग रहते है, उन्हें जैन धर्म की जानकारी दी जानी चाहिये। इस पर उन्हें तप–बल से ज्ञात हुआ कि ओसियां नगरी में जाना चाहिये। आचार्य श्री अपने शिष्यों सहित ओसिया नगरी में आये। उस समय उत्पल राजा राज करता था, राजा ने नगर प्रवेश के लिए रोक लगा दी जिससे वे बाहर ही एक पहाड़ी पर रहने लगे। यह क्रम कई दिनों तक चलता रहा। आचार्य श्री व उनके शिष्यों को गोचरी नहीं मिली। आचार्य ने अपने शिष्यों को अन्यत्र विहार करने को कह दिया लेकिन वे वहीं पर रहे। लम्बे समय तक निराहार रहने व आराधना–साधना से बीहड़ (मंत्री) का स्वास्थ्य खराब रहने लगा जिससे राज–काज में अव्यवस्था होने लगी। बहुत ईलाज करने पर भी सुधार नहीं हुआ। तब विचार करने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि साधु का अपमान करने से यह आपत्ति आई है।

साधु की तलाश करने पर पहाड़ी पर साधना करते हुए दिखाई दिए। उनसे विनती कर नगर प्रवेश करने को कहा गया। आचार्य को धूमधाम से सारे लोगों के साथ नगर में प्रवेश कराया। आचार्य ने वहां रहते हुए जैन धर्म को लेकर उपदेश दिए। उपदेश को सुनकर कई लोगों ने जैन धर्म स्वीकार किया। भगवान महावीर के निर्वाण के 70 वर्ष बाद भगवान महावीर का भव्य मन्दिर निर्माण करा भगवान महावीर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई। आचार्य के उपदेश सुनकर जिन लोगों ने जैन धर्म स्वीकार किया, उनको ओसवाल कहा गया। इस प्रकार ओसवाल समाज की उत्पति हुई और उपकेशगच्छ कहलाया। प्राचीन मन्दिर नहीं रहा लेकिन मंदिर के अवशेष आज भी देखे जा सकते है। मन्दिर का जीर्णोद्धार होता रहा है। वर्तमान प्रक्रिया पर वि.सं. 1017 का लेख है जिसको लगभग 1060 वर्ष हो गये है।

समय व्यतीत होता रहा। जीर्णोद्धार होता रहा ओर विशाल मन्दिर एवं धर्मशाला का निर्माण हो गया। आज यह मन्दिर 52 जिनालय का है। इस मन्दिर में प्रमुख रूप से विभिन्न प्रतिमाएँ स्थापित

है। इसके अतिरिक्त नाग देवता (पुनियाढाणा) अधिष्ठायक देवी–देवताओं की मूर्तियाँ है। मन्दिर कलात्मक होने के साथ–साथ विभिन्न रंगों से सुसज्जित होने से इसकी भव्य सुन्दरता देखने योग्य है।

देवी माता जी

श्री श्री 108
श्री रत्नप्रभसुरी जी म.सा.

नवगृह कुबेर मंदिर

ओसियां मंदिर

श्री महावीर स्वामी
ओसियाँ

अधिष्ठायक देव
श्री पुणिया बाबा-ओसियाँ

नवलखा बावड़ी

जैन मन्दिर के पास ही एक प्राचीन, सुन्दर, कलात्मक एवं गहरी बावड़ी स्थित है जो ओसिया माता के समीप ही है। यहां प्रतिदिन हजारों की संख्या में भक्तगण एवं पर्यटक आते है। इस बावड़ी में 100 महिलाएँ एक साथ किसी को छुए बिना स्नान कर सकती है।

आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीजी के उपदेश से सच्चियामाता के स्थल पर पशुबली का निषेध होने पर देवी ने क्रोधित होकर यह श्राप दिया कि इस नगरी में कोई भी ओसवाल बन्धु स्थायी रूप से नहीं रह सकेगा। इस कारण इस नगरी में कोई भी ओसवाल नहीं रहता है। अधिकतर व्यापारी माहेश्वरी समाज के है। यद्यपि बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों के लिए भव्य धर्मशाला का निर्माण हो गया है एवं यात्रीगण विश्राम करते हैं।

अहड़ ने ओसिया नगरी बसायी। संवत् 1011 में 358000 क्षत्रियों एवं अन्य को ओसवाल बनाया गया। मन्दिर की मुख्य प्रतिमा 1164 वर्ष तक जमीन में रही थी। यह प्रतिमा सम्प्रति कालीन है। वि.सं. 1017 में इसकी प्रतिष्ठा करायी गयी। मन्दिर का निर्माण वि.सं. 830 (ए.डी. 783) में राजा वत्सराज ने इसे बसाया था। पूर्व में इसका नाम "मैलपुरपटन" था। वि.सं. 1013, 1017 माहवरी आठम, वि.सं. 1035, 1088, 1234, 1259, 1338, 1492, 1512, 1612, 1683, 1758 के लेख मूर्तियों व स्तम्भों पर अंकित है।

फलौदी का इतिहास व जैन मंदिर
फलौदी जैन तीर्थ

1) श्री महावीर स्वामी (1997) 2) श्री सम्भवनाथ जी 3) श्री आदीनाथ
4) श्री शान्तिनाथ 5) श्री शीतलनाथ 6) श्री मुनिसुव्रत स्वामी
7) श्री गौड़ी पार्श्वनाथ 8) श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ।

श्री विजयपुरपत्तन तीर्थ

तीर्थाधिराज : श्री शांतिनाथ भगवान, पद्मनाथनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग 43 से. मी.।

तीर्थ स्थल : फलौदी शहर के सदर बाजार में।

प्राचीनता : आज का फलौदी शहर पूर्वकाल में विजयनगर, विजैपुर, विजयपुरपत्तन, फलवृद्धिकानगर, फलादि आदि नामों से विख्यात है।

कहा जाता है कि इस प्राचीन विजयपुरपत्तन की स्थापना, जैन धर्मोपासक, प.पू. ओशवंश के संस्थापक आचार्य भवंगत श्री रत्नप्रभूसरीश्वरजी म.सा. द्वारा प्रतिबोधि, ओसियां नगर के शासक, श्री उपलदेव के पुत्र श्री विजयदेव ने की थी। एक अन्य मतानुसार इन्हीं विजयदुव ने वि.सं. 282 में इस नगरी की स्थापना की थी। इसी वंश का शासन लगभग वि.सं. 550 तक रहने का व अन्तिम शासक की वासुराव के रहने का उल्लेख है।

एक ओर उल्लेखानुसार सिंधनसौवीर की राजधानी विजयपुरपत्तन थी, जिसके शासक प्रभु वीर के परम भक्त राजा उदयन थे व पश्चात उनके भाणेज श्री केशीकुमार रहे थे। श्री केशीकुमार के शासनकाल में भारी भूकम्प व तूफान आदि के कारण इस नगरी को भारी क्षति पहुँचकर ध्वंस होने का उल्लेख है। वह अति ही जहोजलालीपूर्व नगरी अभी तक अज्ञात है। जगह की निकटता व नाम में लगभग समानता देखते लगता है संभवतः यही वह नगरी हो क्यों कि जगह की निकटता होने के कारण यह भाग सिंध–सौवीर के अंतर्गत रहा हो व भूकम्प से ध्वंस होने के पश्चात् पुनः बसा हो, लेकिन इसके अन्वेषण की आवश्यकता है।

लगभग चौदहवीं सदी के मध्य तक यह विजयपुरपत्तन नगरी किले के साथ अति ही जहोजलालीपूर्ण आबाद रहने का उल्लेख है। यह भी कहा जाता है कि जब यह नगर विजयपुरपत्तन कहलाता था उस समय यह नगर आंचन राजपूतों के अधिकार में था। अतः हो सकता है कि वि.सं. 550 से लगभग चौदहवीं सदी तक उनका शासन रहा हो।

लगभग चौदहवीं सदी के पश्चात् इस पावन स्थल की पुनः भारी क्षति पहुँचने का उल्लेख है। पश्चात् उस विरान सी नगरी का अधिकार सवजोधाजी के पास आया। जोधाजी ने वि.सं. 1517 में अपने पुत्र

सुजाजी को अधिकार प्रदान किया। सुजाजी ने यहां की पुनः उन्नति के लिये पूर्ण प्रयास किया। पश्चात् इसका कार्यभार अपने पुत्र राव नरा को संभलाया। तदुपरांत इसका कार्यभार नरा के पुत्र राव हमीर के पास आया। राव हमीर का शासनकाल लगभग 1590 तक रहने का उल्लेख है।

वि.सं. 1515 से 1545 के दरमियान यहां किला व जैन मन्दिर भी बनवाने का उल्लेख है। परन्तु संभवतः उस समय जीर्णोद्धार हुआ हो क्योंकि पहले किला रहने का उल्लेख आता है। जब भी कहीं कोई नगर बसा तो वहां पहले किले का निर्माण होने व साथ–साथ प्रायः हर जगह जैन मन्दिर भी बनने का उल्लेख आता है। आज भी प्रायः प्रत्येक किले में जैन मन्दिर पाये जाते हैं क्योंकि प्रारंभ से हर राजा को नगर नया या पुनः बसाने व संचालन में जैन श्रावकों का हमेशा साथ रहा व प्रायः हर राजा के दीवान, खजांची आदि जैन श्रावक खजांची आदि जैन श्रावक ही रहे।

राव हमीर के पश्चात् यहां की सत्त राव राम, राव डूँगरसी, राव मालदेव व उदयसिंह के पास रही। पश्चात् कुछ वर्ष तक जेसलमेर व बीकानेर के अधीन रही। वि.सं. 1672 से पुनः जोधपुर के अधीन है। उक्त वर्णन से यहां की प्राचीनता स्वतः सिद्ध होती है व प्रतीत होता है कि इस स्थान का अनेकों बार उत्थान–पतन हुआ ।

पूर्व काल में जैन राजाओं, जैन मंत्रीगणों व जैन श्रेष्ठीगणों द्वारा समय–समय पर अनेकों मन्दिरों का भी अवश्य निर्माण हुआ होगा, परन्तु आज उन प्राचीन मन्दिरों का पता नही है। संभवतः राज्य क्रांति या भूकम्प आदि के कारण भूमिगत हो गये होंगे, जैसा प्रायः हर जगह पाया जाता है। यहां पर भी भूगर्भ से प्राचीन भग्नावशेष प्राप्त होते रहने का उल्लेख है।

वर्तमान पूजित जैन मन्दिरों में यह भी शांतिनाथ भगवान का मन्दिर प्राचीन माना जाता है। जिसका अंतिम जीर्णोद्धार वि.सं. 1689 में होने का उल्लेख मन्दिर में एक शिललोख में है। उस समय इस शहर का नाम फलवृद्धिकानगर रहने का उल्लेख है।

किले में स्थित प्राचीन जैन मन्दिर के भग्नावशेष भगवान की गादी के साथ आज भी दिखाई देते हैं जो यहाँ की प्राचीनता की याद दिलाते हैं परन्तु मन्दिर में प्रतिमाएँ नहीं है, संभवतः सुरक्षार्थ कहीं और जगह विराजमान कर दी होगी। किले के दरवाजे के ऊपरी भाग में पाट पर भी पार्श्व प्रभु की अति मनोरम प्रभावित सुन्दर प्रतिम उत्कीर्ण है जो आज भी विद्यमान है।

विशिष्टता : इस पावन नगरी की प्रथम स्थापना करने का सौभाग्य जैन धर्मावलम्बी राजा को प्राप्त हुवा जिन्होंने सैंकड़ों वर्ष तक राज्य किया। यह यहां की मुख्य विशेषता है।

गत विध्वंस के पश्चात् भी पुणरोद्धार में जैन श्रावक राव जोधाजी के विश्वासपात्र ख्याजांची श्री मेहपालजी के पुत्र श्री कोचरजी का भी विशेष सहयोग प्राप्त हुआ था, ऐसा उल्लेख है। यह भी यहाँ की विशेषता है। गत विध्वंस के पश्चात पुनरोद्धार में श्री सिद्धूजी कल्ला का भी सहयोग मिलने का उल्लेख है,

जो सराहनीय है। कहा जाता है कि श्री सिद्धूजी कल्ला पुष्करणा ब्राह्मण थे। आज भी यहाँ ओसवाल समाज व पुष्करणा ब्राह्मण समाज के घर ज्यादा है।

शताब्दी पूर्व प्राचीनकाल में ओर भी अनेकों जैन श्रावकों ने धर्म प्रभावना व जन कल्याण के अनेकों कार्य किये होंगे। वर्तमान शताब्दी में भी यहाँ के श्रावकों ने धर्म प्रभावना व जन कल्याण के अनेकों कार्य किये है उनका पूर्ण विवरण यहां देना संभव नहीं। अनेकों यात्रा संघों का भी आयोजन हुआ, जिनमें वि.सं. 1990 में श्री पांचूलालजी वैद द्वारा आयोजित यहां से जैसलमेर का भव्य छरी पालक यात्रा संघ विख्यात व विस्मरणीय है। जिसे आज भी भाग लेने वाले साधु–साध्वीगण व यात्रीगण याद करते हैं। स्व. श्री किशनलाल लुणावत दानवीरों में आज भी मशहूर है, जिन्होंने किसी याचक को खाली हाथ नहीं भेजा। उन्होंने मन्दिर, धर्मशाला व उपाश्रय का भी निम्रण करवाया।

आज भी यहाँ के श्रावक भारत भर में जगह–जगह बसे हुए हैं व अनेक प्रकार के जन कल्याण व धर्म प्रभावना के कार्य करते आ रहे है। यहाँ पर प्राय: सभी प्रकाण्ड विद्वान आचार्य भगवंतों वे मुनि भगवंतों के समय–समय पर चातुर्मास हुए है। उन्होंने यहां के श्रावकों की भूरी–भूरी प्रशंसा की है। आचार्य श्री यतिन्द्रसूरीश्वरजी ने वि.सं. 1987 में लिखा है कि यहां के श्रावक भावुक व श्रद्धालु है और योग्य साधु–साध्वियों की अच्छी कदर करने वाले हैं।

श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज (घेवरमुनिजी) ने यहां रहकर लगभग 375 से ज्यादा धर्म से संबंधित स्तवनों आदि की पुस्तकें लिखी थी जो भी रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला के नाम विख्यात हुई। वे पुस्तकें आज भी ऐतिहिकस व अति ही महत्वपूर्ण मानी जाती है।

श्री छगनसागरजी, हरीसागरजी, कंचनविजयजी, कमलविजयजी आदि 18 मुनि भगवन्तों व 112 साध्वीगणों की यह जन्मभूमि है। वर्तमान में जगह–जगह प्रभु भक्ति का प्रचार व मन्दिरों की प्रतिष्ठा करवोन वाले, कच्छ वागड देशोद्धारक, अध्यात्म योगी प.पू. आचार्य भगवंत श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा. ने भी यहां जन्म लेकर इस भूमि को पावन बनाया है। हमारे प्रांगण में निर्मित श्री जैन प्रार्थना मन्दिर की प्रतिष्ठा भी आप ही के सुहस्ते दि. सं. 2050 वैशाख शुक्ला पंचमी को सम्पन्न हुई थी।

अन्य मन्दिर : वर्तमान में इसके अतिरिक्त ओर 10 मन्दिर, रत्नप्रभसूरिगुरू मन्दिर व 4 दादावाड़ियां है। निकट के गांव खींचन, लोहावट व जाऊ में भी प्राचीन जैन मन्दिर है जो अति दर्शनीय है।

कला और सौन्दर्य : शांतिनाथ भगवान के मन्दिर में हस्तलिखित स्वर्ण कला अति ही विशिष्ट व अनूठी है जो प्राचीनकाल के कला का स्मरण करती है। ऐसी कला के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है।

अन्य सभी मन्दिरों में कला के कुछ न कुछ नमूने अवश्य मिलेंगे, जिनमें **श्री आदीश्वर भगवान एवं श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर बहुत ही अनूठे ढंग से बने है।** आदिनाथ प्रभु का मन्दिर भी

प्राचीनता में लगभग श्री शांतिनाथ भगवान मन्दिर के समकालीन है, जो बाजार के बीच चारों तरफ रास्तों के साि बना है ऐसा कम जगह मिलेगा। श्री गौड़ी पार्श्वप्रभु का भव्य मन्दिर अपनी विशालता व तीन पोल के साथ शहर के लगभग बीच में बहुत ही अनुपम ढंग से निर्मित है, जो देखने योग्य है। इस जगह को त्रिपोलिया कहते हैं। प्रायः सभी यात्री इस मन्दिर का दर्शन अवश्य करते हैं।

मार्गदर्शन : यहां का रेल्वे स्टेशन फलौदी इस मन्दिर से से लगभग 2 कि.मी. दूर है। ठहरने के लिये ओसवाल न्याति नोहरा लगभग एक कि.मी. दूर है। स्टेशन पर व गांव में टेक्सी व ऑटो का साधन है। यह

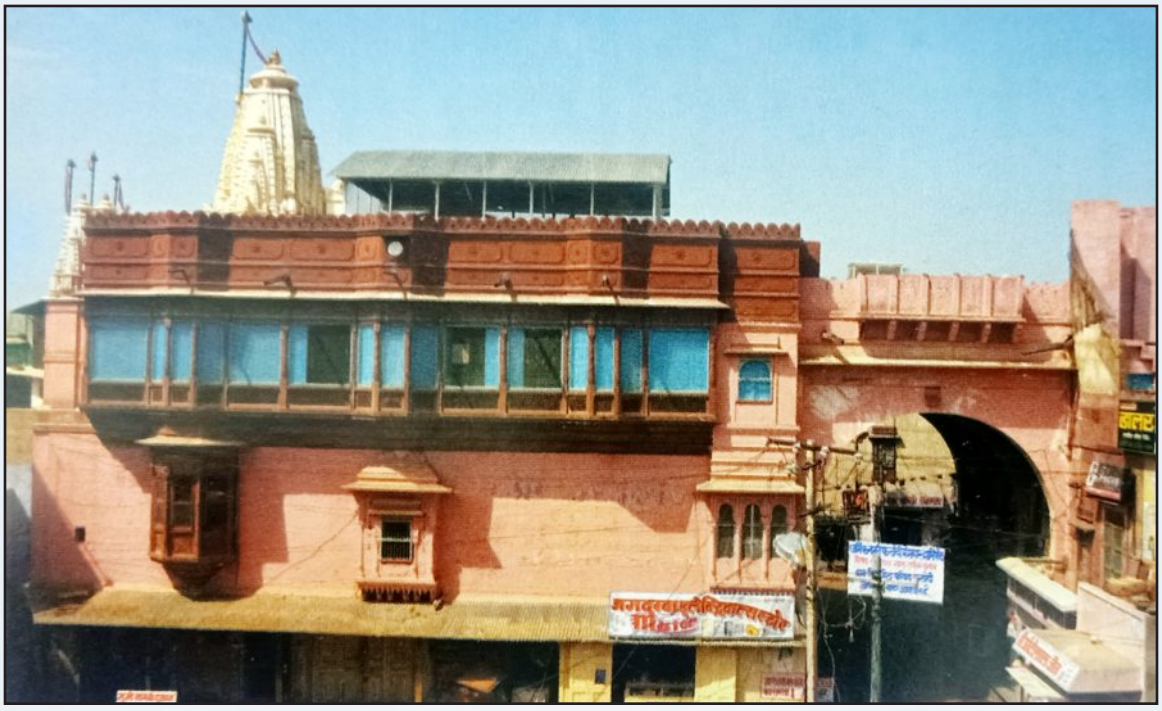

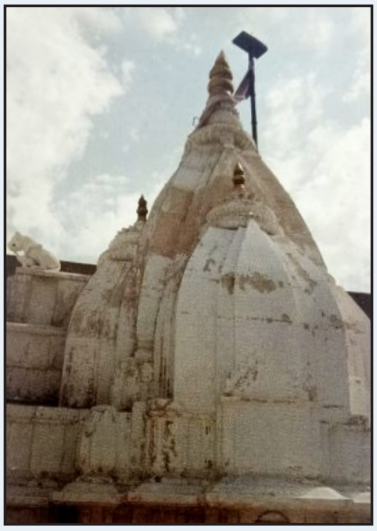

क्षेत्र जोधपुर से जैसलमेर रेल मार्ग पर व जोधपुर, बीकानेर से जैसलमेर सड़क मार्ग पर स्थित है।

यहां से जोधपुर लगभग 135 कि.मी., जैसलमेर 165 कि.मी., नागौर 160 कि.मी., बीकानेर 165 कि.मी. व नाकोड़ा 190 कि.मी. दूर हे। सभी जगहों से सवारी के साधन है। मन्दिर व न्याति नोहरों तक कार व बस जा सकती है। जहां से खींचन लगभग 5 कि.मी. लोहावट 30 कि.मी. तिंवरी 90 कि.मी. व आसियां लगभग 75 कि.मी दूर है।

सुविधाएँ : ठहरने हेतु विशाल ओसवाल जैन न्याति नोहरा है जहां सर्वसुविधायुक्त कमरे बने है। कार व बस भी अन्दर तक जा सकती है। भोजनशाला की भी सुविधा है। यहां 20 उपाश्रय है।

पेढ़ी : श्री शांतिनाथ भगवान जैन मन्दिर

श्री जैन तपागच्छीय संघ पेढ़ी,
सदर बाजार, पोस्ट–फलौदी–342301,
जिला जोधपुर (राज.), फोन : 02952223334 पी.पी.

श्री ओसवाल जैन न्याति नोहरा

जसवन्तपुरा, पोस्ट फलौदी–342301,
जिला जोधपुर (राज.), फोन : 02925222013

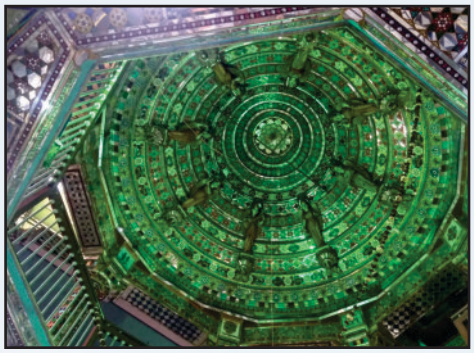

फलौदी नगर की ऐतिहासिक मन्दिरों की पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : फलौदी राजस्थान राज्य के अन्तर्गत जिला–जोधपुर के ओसियां नगरी के जोधपुर से जैसलमेर जाने वाली मुख्य सड़क पर 30 कि.मी. दूर मुख्य सड़क से लगभग 2 कि.मी. दूर यह नगर है। स्टेशन से नगर के बीच में दो दादावाड़ी स्थापित है।

इस नगर का प्राचीन नाम विजयनगर विजेपुर, विजयपुरपतन, फलवृद्धिदायककानगर, फलौदी नाम से प्रसिद्ध रहा। संभावना यह है कि फलदायक का अपभ्रंश व छोटा नाम से फलौदी नाम पड़ा।

यह नगर प्राचीन रहा है, ऐसी मान्यता है कि इस नगर को ओसियां नगर के राजा उत्पलदेव के पुत्र श्री विजयदेव ने बसाया। ऐसी भी मान्यता है कि इसी वंश का शासक वि.सं. 2 वि.सं. 550 तक रहा। अतः यह स्पष्ट होता है कि यह नगर वि.सं. 2 के लगभग हुई। यहां के निवासी बहुत ही धर्मप्रिय थे। नगर में जैन धर्म के अनुयायियों का बहुलता थी। वे साधु–साध्वी की भक्ति करते हैं, मंदिरों का निर्माण कराएं। यह कई साधु–साध्वी की जन्म स्थली रही है। जिसमें से प्रमुख श्री कंचन विजय जी, कमला विजय जी, आचार्यश्री कलापूर्ण सूरीश्वर थे। यह 112 भगवंतों की भी जन्मभूमि रही है। यहां कई प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार कर प्रतिष्ठा भी आचार्य श्री कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. के द्वारा वि.सं. 20 वैशाख शुक्ला पंचमी को कराई।

इस नगर की प्रशंसा आचार्य श्री यतिन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. द्वारा रचित पुस्तक में वि.सं. 1987 में की है। इस नगर में मुनि श्री श्याम ज्ञान सुन्दर जी 375 दिन विजय कर जो ज्ञान पुष्पमाला के नाम से प्रसिद्ध है। ये साधु भगवंत अच्छे इतिहासकार, अनुसंधान कार्य में निपूर्ण थे। मैंने इनका कई साहित्य का अध्ययन किया है।

शहर की स्थापना के आधार पर प्राचीनकाल में कई मंदिरों का होंगे लेकिन वर्तमान में प्राचीनता की झलक नहीं लगती इसका कई कारण हो सकते हैं। जिसमें प्राकृतिक के आपदा व मुगलों का आक्रमण सम्भव है। यह भी सत्य है कि वर्तमान में कई स्थानों पर मंदिरों के भग्नावेश मिलते है।

अंतिम शासक श्री वसुराव के होने का उल्लेख है, एक अन्य लेख श्री शिपसोवत्री का राजधानी वितमय पतन इसके शासक राजा उदायन थे उसके पश्चात् केशीकुमार के शासनकाल में भारी भूकम्प आदि के कारण इस नगरी में भारी क्षति होने का उल्लेख है। अति जुआ जलाली नगरी अभी तक अज्ञान है। जगह की निकटता व समानता को देखने से लगता है, यही नगरी हो लगभग 14वीं शताब्दी से है।

यह भी कहा जाता है कि 14 वीं शताब्दी के बाद 550 से 14वीं शताब्दी तक इस नगर में क्षति होने का उल्लेख है। जोधावती, के बाद राव सूजा ने 1517 में अधिकार प्राप्त हुआ। सूजा जी इस नगरी की उन्नति का प्रयास किया और राव हमीर के पास आया ओर इसके शासन 1590 तक उल्लेख है।

हमीर का शासन 1590 तक रहने का उल्लेख है। सं. 1515 से 1545 के बीच यह किला जैन मंदिर